॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष २३ अंक ९ - सितम्बर २०२३

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के 'अमृत महोत्सव' पर सभी हुतात्माओं, आर्य क्रांतिकारियों, देशभक्तों को शत् शत् वन्दन!

श्रावणी वेदप्रचार समारोह

सोलापुर आर्य समाज में संचालन करते हुए पं.राजवीरजी शास्त्री।
मंच पर हैं वैदिक विद्वान पं.ज्ञानप्रकाशजी एवं भजनोपदेशक पं.विष्णू आर्य।

वारजे पुणे में भजन प्रस्तुत करते हुए पं.प्रदीपजी आर्य। साथ में
मंच पर विराजमान हैं वैदिक विद्वान आचार्य पं.शिवकुमारजी, पं.गणेशजी आर्य।

पूर्णा के पं.गुरुबुद्धि महाविद्यालय में छात्रों को सम्बोधित करते हुए वैदिक व्याख्याता
पं.यशवीरजी आर्य। साथ में हैं पं.नेत्रपालसिंह आर्य एवं अन्य।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ | कलि संवत् ५१२४ | विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ | निज श्रावण/भाद्रपद | १० सितम्बर २०२३

प्रधान सम्पादक **राजेन्द्र दिवे** (९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक **डॉ.ब्रह्ममुनि**

सम्पादक **डॉ.नयनकुमार आचार्य** (९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु – ई–मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०४

२) वैदिक धर्म ही 'सनातन' है ! (सम्पादकीयम्)............ ०५

३) हैदराबाद संग्राम में 'आर्य समाज' का आन्दोलन ०८

४) समाचार दर्पण १६

७) सभा उपक्रम... १८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९

२) श्रीकृष्णांचे आदर्श प्रेरक जीवन २०

३) हैदराबाद संग्रामात शोएब उल्लाखानचे बलिदान..... २४

४) महाराष्ट्र विधानसभेत आर्य समाजाचा गौरव २९

५) शोक समाचार ३०

*** प्रकाशक ***

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय–आर्य समाज,
परली–वैजनाथ–४३१५१५

*** मुद्रक ***

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली–वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली–वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

विद्वान् माता के समान

मातेव यद्भरसे पप्रथानो जनञ्जनं धायसे चक्षसे च।
वयोवयो जरसे यद्दधानः परि त्मना विषुरुपो जिगासि।।

(ऋग्वेद ५/१५/४)

पदार्थान्वय– हे विद्वान्! (**यत्**) जिस कारण (**पप्रथानः**) प्रसिद्ध विद्यायुक्त आप (**मातेव**) माता के सदृश (**धायसे**) धारण करने और (**चक्षसे**) कहाने को (**च**) भी (**जनञ्जनम्**) मनुष्य मनुष्य का (**भरसे**) पोषण करते हो और (**त्मना**) आत्मा से (**यत्**) जिस कारण (**दधानः**) धारण करते हुए (**वयोवयः**) सुन्दर जीवन जीवन की (**जरसे**) स्तुति करते हो और (**विषुरुपः**) विद्या जिन को प्राप्त ऐसे हुए सम्पूर्ण पदार्थों की (**परि**) सब प्रकार से (**जिगासि**) प्रशंसा करते हो, इससे विद्वान् होते हो।

भावार्थ – जो विद्वान् लोग माता के सदृश विद्यार्थियों की रक्षा करने, सब की उन्नति करने की इच्छा करते और ब्रह्मचर्य तथा अवस्था के बढने में कारणरुप कार्य्यों का उपदेश करते हैं, वे संसार के आदर करने योग्य होते हैं।

चंद्र विजय

चंद्रयान-३

की भारी सफलता पर इतिहास रचनेवाले इस्रो संस्थान के सभी वैज्ञानिकों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएं..!

वैदिक धर्म ही 'सनातन' है!

राजनीति जब सांप्रदायिकता व जनमानस से जुड़ी आस्थाओं को आधार बनाकर की जाती है, तब सभी पार्टियों के नेता लोग ध्रुवीकरण की नीति अपनाते हैं। क्या सही और क्या गलत ? इस पर विचार किए बिना वे सामान्य लोगों की भावनाओं के पक्षधर बनते हैं । इसके लिए फिर परंपरागत शब्दों का आधार लेकर वक्तव्य देना प्रारंभ होता है, जिससे राजनीतिक लाभ मिल सके। आज की भारतीय राजनीति कुछ ऐसे ही मोड पर खड़ी है। हाल ही में तमिलनाडु के मुख्यमंत्रीपुत्र , द्रमुक नेता श्री उदयनिधि स्टालिन ने सनातन धर्म की तुलना डेंगू तथा मलेरिया के मच्छरों से कर वातावरण को दूषित किया है। इस पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सारे विपक्ष को ही हिंदूविरोधी बताकर परंपरागत सनातन का पक्ष लिया, जबकि भाजपा के एक मंत्री ने उदयनिधि की जीभ तक छाटने की धमकी दी है। इससे पहले भी कांग्रेस या एमआईएम के नेताओं ने भी ऐसे ही भड़काऊ भाषण देकर देश का माहौल बिगड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। ये नेतालोग 'देश की १३०करोड़ जनता पर अपने निरर्थक वक्तव्यों का क्या परिणाम होगा?' इसका कदापि विचार नहीं करते। बस, जो मन में आए वह बोलते रहते हैं।

वस्तुतः 'सनातन' की परिभाषा से ये नेतागण व आज का बुद्धिजीवी वर्ग भी अनभिज्ञ है । धर्म ,अध्यात्म, संस्कृति,वेद, मनुस्मृति, वर्णव्यवस्था और आजकल के 'सनातन' जैसे शब्दों का गलत प्रयोग कर एक प्रकार से समाज में भ्रम फैलाने व व्यवस्था को बिगाड़ने का ही यह प्रयास है।

'सनातन' शब्द का अर्थ है शाश्वत, निरंतर, स्थायी, अपरिवर्तनीय एवं कभी नष्ट न होनेवाला ! पुराना होते हुए भी आज भी जो नया लगता हो, वह है सनातन! इसे विश्व की प्राचीन तत्वप्रणाली भी कह सकते हैं, जो कि कल उपयुक्त थी, आज है और भविष्य में भी रहेंगी । वैदिक दृष्टिकोण से ईश्वर, जीवात्मा एवं प्रकृति व उनके नियम अनादि होने से 'सनातन' हैं । ये कभी बदलते नहीं । हमेशा नए-नए ही प्रतीत होते हैं। इनका सम्यक् प्रतिपादन करनेवाले 'वेद' भी सनातन है तथा

वैदिक धर्म व उसके सिद्धांत भी सनातन हैं। अथर्ववेद के (१०/८/२३) मंत्र में सनातन की परिभाषा मिलती है-

सनातनमेनमाहुः उताद्य स्यात् पुनर्णवः।
अहोरात्रे प्रजायेते अन्योऽन्यस्य रूपयोः।।

अर्थात् सनातन उसी को कहते हैं, जो सदा रहनेवाला व अविनाशी हो। वह तो आज भी नये जैसा ही है, जैसे कि दिन - रात एक दूसरे के रूप में उत्पन्न हुआ करते हैं। ये कभी पुराने भासित होते ही नहीं, उनमें प्रतिदिन नूतनता ही दृष्टिगोचर होती है। दिन के पश्चात रात और रात के पश्चात दिन... ! जिन्हें हम रविवार, सोमवार, मंगलवार आदि कहते हैं। सूर्य ,चंद्र, वायु, पृथ्वी आदियों का कार्यचक्र भी युगों -युगों से चला आ रहा है। समग्र विश्व के लिए वे एक समान हैं। ये भेदभावनाओं व अन्य संकीर्णताओं से दूर हैं। ईश्वरकृत वेदज्ञान भी ऐसा ही है। इसलिए वैदिक धर्म सनातन है, क्योंकि इसके सभी तत्व कभी पुराने होते ही नहीं। वे कभी बदलते नहीं, किन्तु जब इनमें मनोवांछित परिवर्तन लाया जाता है,तब वे मत या पंथ बन जाते हैं।

आजकल के हिंदू सहित जैन, बौद्ध, क्रिश्चियन, इस्लाम आदि संप्रदाय या देवी- देवताओं व महापुरुषों के नाम पर बनें पंथ, जिन्होंने कि वेदादि सत्य शास्त्रों के सिद्धांतों को त्याग दिया है और जो मनुष्यकृत अवैदिक कल्पनाओं के आधार पर खड़े हैं, तब वे सनातन कैसे हो सकते हैं ? हिंदू ने अपने मूल वैदिक धर्म को छोड़कर पौराणिक पाखंड को अपनाया। वेदों पर तो इसकी श्रद्धा है, किंतु वह पूर्णरुप से नहीं। वेदप्रणित एकेश्वर व एक उपासना पद्धति को छोड़कर इसने अनेकेश्वर व जड़पूजा को स्वीकारा है। ईश्वर के निराकार, व्यापक, अजन्मा, सर्वशक्तिमान, अनादि, सर्वान्तर्यामिन् आदि सत्य स्वरूपों को त्यागकर उसमें साकार, एकदेशी, जन्मधारक, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, फलितज्योतिष, मठ- मंदिर तीर्थस्थान, गरुड़मवाद , छुआछूत आदियों को स्वीकार किया है। फिर वह स्वयं को क्यों और कैसे सनातन समझता है? गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था को जन्माधिष्ठित बनाकर दलित, पिछड़ी, निचली जाति आदि भेद-भावनाओं की दीवारें खड़ी की है। अपने ही भाइयों को अछूत समझकर उन्हें सालों से अपने से दूर रखा और उनपर अत्याचार किए। सती प्रथा का प्रचलन किया। दलितों व महिलाओं को वेदज्ञान से वंचित रखा गया। तब इसके

विरोध में तमिलनाडु में ई.वी.रामासामी पेरियार और महाराष्ट्र में डा. भीमराव अंबेडकर जैसे सुधारवादी व्यक्तियों ने आंदोलन खड़ा किया । इन्होंने अपने दलित समाज के अन्याय पीड़ित लोगों का एक अलग समूह बनाया और वे हिंदुओं से अलग हो गए। यदि हिंदू अपने मूलभूत मिथ्या अज्ञानजनित दोषों व गलतियों को सुधारकर अपने मूल वैदिक 'सनातन सत्य स्वरूप' को समझते और उन सिद्धांतों का जीवन में पालन करते,तो ये नए-नए मत - पंथ या संप्रदाय क्योंकर बनते ? फिर उधयनिधि जैसे नेता वेदविरोधी क्यों बनतें और इस तरह के बयान क्यों देते ?

आज भी समय नहीं गया। महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने हजारों वर्षों के पश्चात वैदिक सत्य धर्म के सनातन स्वरुप को दुनिया के सामने रखा। आर्य समाज के माध्यम से फिर एक बार वैदिक सनातन धर्म की स्थापना की। सत्यार्थ प्रकाश जैसा महान ज्ञानग्रंथ लिखकर वैदिक क्रांति का शंखनाद किया । लेकिन आज संघ, भाजपा, कांग्रेस, शिवसेना, सपा, आप, द्रमुक सहित किसी भी दल के नेताओं को महर्षि दयानंद का स्मरण नहीं होता, यह कितनी वेदना का विषय है। ये सभी राजनेता, प्रगतिशील विचारधारा के पक्षधर , तर्कनिष्ठ वैज्ञानिक, साहित्यिक, बुद्धिजीवी वर्ग, सभी मत-संप्रदायों के गुरु या अनुयायी जब महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विशुद्ध वैदिक सनातन धर्म के तत्वों को जानेंगें, समझेंगें व उसपर आचरण करेंगें, तो निश्चय ही सारी समस्याओं का समाधान होगा और सनातन के विवाद दूर हो जाएंगें। वैदिक सनातन सभी प्रकार की भेदभावनाओं को दूर कर वैश्विक मानवता के आधार पर सभी को अपनाता है। बस इस सत्य सनातन को मनसा, वाचा, कर्मणा सत्य को आचरण में लाना है। क्योंकि इसी से परिवार, समाज, राष्ट्र, समग्र विश्व में सर्वत्र सुख व शांति की स्थापना हो सकती है।

सनातन धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझ कर सभी देशवासी अपनी वाणी से यथार्थ सत्य और प्रिय बोलेंगें और वैसा ही व्यवहार करेंगें, तो सभी का कल्याण हो जाएगा। मनु महाराज भी इसी सत्य और प्रिय व्यवहार को सनातन धर्म कहते हैं-

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्
एष धर्मः सनातनः।।

****

- नयनकुमार आचार्य

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम में

आर्य समाज का प्रखर आन्दोलन

– (स्व.)वसंत ब. पोतदार

महर्षि दयानन्द ने सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। उनकी मातृभाषा गुजराती थी, फिर भी उन्होंने हिन्दी भाषा का अध्ययन किया और इसी आर्य भाषा के माध्यम से उन्होंने समग्र भारतवर्ष में आर्य समाज का विस्तार किया। हिन्दू(आर्य) समाज की दुर्बलता को लेकर दयानन्द सरस्वती अतीव अस्वस्थ रहते थे। हिन्दुओं की दीनहीन अवस्था को देखकर उनका मन बेचैनी से व्याकुल होता था। सत्य का प्रभावपूर्ण प्रकाश प्रदान करनेवाले वैदिक तत्त्वज्ञान को आचरण में लाये बगैर इस देश को अन्य कोई तरणोपाय नही है, इस श्रद्धाभाव से उन्होंने अपने का कार्यों का शुभारम्भ किया। आर्य समाज के असंख्य अनुयायी व कार्यकर्त्ता तैयार किये। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए हिन्दुओं के निरुत्साही मन को चालना देकर उसे तेजस्वी बनाया।

इस कार्य में अपने सर्वस्व का त्याग कर अपार कष्ट सहने के लिए तत्पर बुद्धिमान-विचारविदों व प्रभावशाली वक्ताओं का निर्माण किया। आगे चलकर स्वामीजी के इन्हीं तेजस्वी अनुयायियों ने 'गुरुकुल' विद्यालयों जैसी संस्थाओं की स्थापना की। इन शैक्षिक संस्थानों से सर्वदृष्टि से आदर्श युवकों की पीढी तैयार हो गयी। गुरुकुलों में पढा हुआ ब्रह्मचारी विद्यार्थी पांच-दस हजारों में अन्यों से भिन्न और शोभायमान दिखाई देता था। बलवान शरीर, तेजस्वी चेहरा, वाणी में ओज तथा सामर्थ्य के साथ ही उसकी देश एवं वैदिक धर्म पर असीम निष्ठा रहती थी। गुरुकुलीय शिक्षा में छात्रों में असामान्य वक्तृत्व कला का भी सम्पादन कराना यह बात बडी वैशिष्ट्यपूर्ण रहती थी।

हैदराबाद राज्य में सन १९२० में आर्य समाज की स्थापना हुई। अगले दो-तीन सालों में ही व्यवस्थित ढंग से काम करने वाली लगभग दो सौ शाखाएँ

खुल गईं। निज़ामी राज्य में हैदराबाद के बै. विनायकराव कोरटकर आर्य समाज के अध्यक्ष थे । बंसीलालजी मुख्यमंत्री थे। उन्होंने उदगीर में अपना मुख्य कार्यालय खोला । उन्होंने 'वैदिक संदेश' नामक वृत्तपत्र सोलापुर से प्रकाशित करना शुरू किया । 'वैदिक संदेश' को निज़ाम स्टेट में सभी दूर पहुँचाने की व्यवस्था की । यह अत्यंत अनुशासनप्रिय और ध्येयवादी संगठन था । मातृभूमि के प्रति निश्चल प्रेम और अपने वैदिक धर्म पर प्रगाढ़ निष्ठा, इन दो मानबिंदुओं के लिए हर आर्य समाजी अपनी जान की भी बाजी लगाने को तैयार रहता था।

हैदराबाद राज्य के बहुसंख्यक समाज का कोई रखवाला नहीं था । उलटे हिंदुओं को समाप्त करने के लिए खाकसार पार्टी, निज़ाम सेना, इत्तेहादुल संगठन, दीनदार सिद्दीक़ के धर्मप्रचारक अनुयायी, सबने कोहराम मचा रखा था । सब समझ चुके थे कि इन सबका प्रतिकार करने वाला हिंदुओ का एकमात्र संगठन '**आर्य समाज**' ही है । उत्तर भारत से सैंकड़ों आर्य समाजी कार्यकर्ता अपनी जान की परवाह किये बिना, निजाम राज्य में चले आये । विशेषकर मराठवाडा में कई आर्य समाजी नेता और कार्यकर्त्ता निजाम के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गए।

२/९/१९२९ को दीनदार सिद्दीक़ पार्टी नामक इस्लाम धर्म प्रसारक संस्था की स्थापना हैदराबाद राज्य में हुई । दीनदार सिद्दीक़ स्वयं को चन्न बसवेश्वर का अवतार बताते थे, और कहते थे कि भगवान् बसवेश्वर के विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए ही इस्लाम धर्म है । इस प्रकार गुमराह करके दीनदार सिद्दीक़ और उनके अनुयायियों ने हिंदुओं को इस्लाम धर्म में परिवर्तित करना शुरू किया । अपने प्रचार-प्रसार में वे राम और कृष्ण जैसे हिंदुओं के भगवानों का अपमान करते और इस्लाम को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ धर्म बताते । १९२९ में आर्य समाजी आंदोलन में भी तेज़ी आई। १९३० में हैदराबाद राज्य के प्रत्येक जिले में आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा । उदगीर के भाई बन्सीलाल और श्यामलाल, इन दोनों बंधुओं ने राज्य में भरपूर कार्य किया। हैदराबाद राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान केशवराव कोरटकर, पं.नरेंद्रजी, बै.विनायकरावजी विद्यालंकार आदियों ने हिंदू समाज में फैली कमजोरी और हीनभावना को नष्ट कर, उसे पूरे स्वाभिमान और गर्व से जीना सिखाया। अपने राज्य में आर्य समाज के बढ़ते

प्रभाव को देख कर निजाम की वक्रदृष्टि आर्य समाज पर पड़ी। १९३५ में निलंगा में सरकार ने अपने गुंडों के माध्यम से एक यज्ञकुंड और एक आर्य समाज मंदिर ध्वस्त कर दिया। किसी के हाथ में 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक देखते ही निजामी पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती थी। निलंगा की इस घटना से एड.शेषरावजी वाघमारे (पिताजी-आनंद मुनिजी) और उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं के क्रोध की सीमा न रही। शेषरावजी निर्भीक, साहसी, संगठन-कुशल और बुद्धिमान नेता थे। उन्होंने इस अत्याचार का बदला लेने के लिए हजारों लोगों को गाँव-गाँव में, शस्त्रों से सुसज्जित आर्य समाज का संगठन स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। भाई बंसीलाल जी, श्याम लाल जी, शेषराव जी, दत्तात्रेय प्रसाद, गोपाल देव शास्त्री आदि आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव घूम कर हिंदुओं को 'वैदिक धर्म' के ध्वज तले हथियारों समेत एकत्रित किया। अनगिनत गांवों में आर्य समाज मंदिर स्थापित हुए। इत्तेहादुल पार्टी या रजाकार की ओर से आक्रमण होने का कोई भी अंदेशा होता, तो आर्य समाज मंदिर की घंटियां बजने लगती। घंटियों की आवाज सुन घर-घर से पुरुष और १८-२० साल के लड़के लाठियां, कुल्हाड़ी, भाले, बरछियाँ, तलवारें, बंदूके आदि लेकर आर्य समाज मंदिर की ओर दौड़ पड़ते। ५-१० मिनट में ही सभी, पूरे अनुशासित तरीके से मुकाबले के लिए तैयार हो जाते। खाकसार पार्टी, दीनदार सिद्दीक़ पार्टी, इत्तेहादुल संगठन और रज़ाकार इन सभी के पीछे निजाम सरकार थी। इसलिए वे सभी हिंदुओं के खिलाफ बे-रोकटोक हिंसा कर रहे थे। हिंदू व्यक्ति यदि किसी रोहिले या पठान को गलती से भी कुछ कह दे, तो वे तुरंत पिस्तौल निकाल लेते और जान से मार डालने की धमकी देते।

हिंदुओं के जबरन धर्मांतरण का काम पूरे ज़ोरों से चल रहा था। क्योंकि इस काम को सरकार का पूरा प्रोत्साहन और सहायता थी। सरकार की ओर से इसी काम के लिए तीन सौ से ज्यादा मौलवी वेतन पर रखे गए थे। इस मुहीम को 'तबलीत्' या 'तंज़ीम' कहा जाता था। निजाम ने वेतनभोगी मौलवियों को नियुक्त किया था और हिंदू-मुसलमानों में शांति बनाये रखने के लिए 'अमन कमेटियां' बनाई थी। ये मौलवी उन कमेटियों में काम करते थे। ये अमन कमेटिया सिर्फ दिखावे के लिए थी। ये वेतनभोगी मौलवी

अस्पृश्यों की बस्तियों में घूम-घूम कर उन्हें हिंदुओं के खिलाफ बगावत करने के लिए भड़काते थे। ये मौलवी मुस्लिम गुंडों को भी भड़काते। ये गुंडे खुराफात कर के दंगे भड़काते और सरकारी नौकर उनको बचाते।

उदाहरण के लिए, तालुका कलंब में अंदुर गाँव में एक खटिक, गाय को काटकर उसका माँस बेचने के लिए बाजार में सड़क पर ही बैठ गया। तब हिंदुओं ने इस पर आपत्ति ली। उससे कहा गया- 'चाहो तो आप अपने घर में तुम गोमाँस बेचो, लेकिन यहाँ बीच सड़क पर मत बैठो।' तब वह खटिक चकरा गया। पुलिस हवलदार ने भी उसके विरुद्ध फौजदार से उसकी तकरार की। लेकिन फौजदार साहब ने तो हद ही कर दी !! वे खुद उस गाँव में पहुँचे और उस खटीक को सड़क से उठाकर हनुमान मंदिर की चौपाल पर बैठा दिया। हिंदू और क्रोधित हो गए और दंगा भड़कने के आसार नज़र आने लगे। तब फौजदार साहब ने उसे चौपाल से उठाकर मंदिर के सामने बैठा दिया। ऐसे थे वहाँ के सरकारी अधिकारी !!

ऐसी घटनाओं से आर्य समाज के लोग और अधिक संगठित होते गए। तब इस पर इत्तेहादुल पार्टी और मुस्लिम गुंडे और भी भड़क उठे। सन् १९३८ में गुंजोटी में वेदप्रकाश की हत्या की गयी। वेदप्रकाश की हत्या का समाचार पाते ही भाई बन्सीलाल और वीरभद्र जी आर्य तुरंत गुंजोटी पहुँचे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

वेदप्रकाश की हत्या यह हैदराबाद मुक्ति संग्राम का पहला बलिदान था। उसके बाद भाई श्यामलाल जी को ख़राब खाना और पानी देकर प्रताड़ित किया गया। बीमार होने के बाद भी दवाखाने में नहीं ले जाया गया। अंततः जेल में ही उन्हें जहर देकर मार दिया गया।

इसके पश्चात् हैदराबाद राज्य में सन् १९३८ व १९३९ इन दो सालों में अनेकों शहरों में हजारों की संख्या में आर्य समाजी लोगों ने सत्याग्रह किये। सोलापुर में माधवराव अणे की अध्यक्षता में एक परिषद् आयोजित की गई, ताकि इस सत्याग्रह को हिंदुस्तान की जनता का भी समर्थन मिल सके। इस परिषद् में हैदराबाद विरोध दिवस मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। सारे हिंदुस्थान भर में 'हैदराबाद विरोध दिवस' मनाया गया। भारत भर से कई आर्य समाजी सत्याग्रह में भाग लेने के लिए हैदराबाद स्टेट पहुँचने लगे।

सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपुर, उत्तर प्रदेश, रावलपिंडी से हजारों आर्य कार्यकर्ता हैदराबाद में दाखिल हुए। अनगिनत सत्याग्रहियों को जेलों में ठूंस दिया गया । कईयों को पीटा गया । ख़राब खाना और पानी देने के कारण कईं सत्याग्रही बीमार पड़ गए। उसमें भी हद तो तब हो गई, जब इत्तेहादुल संगठन के गुंडे जेलों में घुस कर पुलिस के सामने ही सत्याग्रहियों को बेरहमी से मारने-पीटने लगे। इस अत्याचार में एक कार्यकर्ता सदाशिव विश्वनाथ पाठक की १२.०८.१९३९ को हैदराबाद जेल में मृत्यु हो गई । राजस्थान के स्वामी ब्रह्मानंद जी का भी चंचलगुडा जेल में निधन हो गया । दिल्ली के शांति प्रकाश जी की भी हैदराबाद जेल में २७.०७.१९३९ को मृत्यु हो गई । नागपुर के पुरुषोत्तम प्रभाकर की १६.१२.१९३८ को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के माखन सिंह की ०१.०७.१९३९ को हैदराबाद जेल में, रावलपिंडी के पंडित परमानंद जी की ०५.०४.१९३९ को हैदराबाद जेल में, उत्तर प्रदेश के स्वामी कल्याणानंद जी की ०८.०७.१९३९ को गुलबर्गा जेल में, बैंगलोर के स्वामी सत्यानंद जी की को चंचलगुडा जेल में, विष्णु भगवंत अंदुरकर की ०२.०५.१९३९ को चंचलगुडा जेल में, व्यंकटराव कंधारकर वकील की ०९.०४.१९३९ को निजामाबाद जेल में मृत्यु हुई। कुल २३ लोगों ने इस आंदोलन के दौरान जेल में अपने प्राणों की आहुति दी । उमरी, जिला नांदेड में गणपतराव, गंगाराम और दत्तात्रेय इन तीन आर्य समाजी प्रचारकों को पठानों ने पत्थरों से पीट-पीट कर मार डाला।

सन् १९४२ में उदगीर में बै. विनायकराव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में एक परिषद् हुई । इस परिषद् में निजामी पुलिस, रज़ाकारों और अमानवीय अत्याचार करने वाले सभी घटकों को चेतावनी दी गई । तब पुलिस और मुस्लिम संगठनों की ओर से हिंदुओं के घरों और दुकानों पर ज़ोरदार हमले किये गए । हुमनाबाद में एक जुलुस पर पुलिस ने गोलियाँ चलाई जिससे ५ लोग मारे गए ।

सन् १९४३ में निज़ामाबाद में फिर एक बार आर्य समाज की परिषद हुई । आर्य समाज आन्दोलन में काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की देश, धर्म और ध्येय पर निष्ठा और व्यवहार पूरी तरह से अनुशासनपूर्ण था । इस परिषद् में पच्चीस हज़ार सैनिकों का एक दल

स्थापित करने का निर्णय हुआ । साथ ही, यह भी निर्णय हुआ कि कई स्थानों पर पाठशालाएँ खोलकर देश से प्रेम करने वाले, निष्ठावान, ऊर्जावान और अनुशासनपूर्ण युवाओं का निर्माण किया जाये। निज़ाम सरकार ने आर्य समाज की दीक्षा ले चुके सरकारी अधिकारी और कर्मचारियों को प्रशासनिक पदों से निकाल देने का फरमान जारी किया । इतना ही नहीं,यहां तक कि अगर कोई सरकारी कर्मचारी किसी आर्य समाजी से बात करता हुआ दीख जाए, तब भी उसे नौकरी से निकाल देने के आदेश जारी कर दिए गए थे। कुल मिलाकर निजाम सरकार का आर्य समाज के लोगों के बारे में अत्यंत सख्त रवैया था।

लातूर के एक नवविवाहित जोड़े को बार-बार पुलिस थाने में बुलाया जाता था । यह युगल पूरी तरह से त्रस्त हो चुका था । पुलिसों की परेशानी से मुक्ति के लिए कोई उनकी मदद करने की स्थिति में नहीं था। ऐसे में किसी बुद्धिमान ने उन्हें 'आर्य समाजी' बनने की सलाह दी । इसलिए वे आर्य समाजी बन गए । आश्चर्य की बात यह कि, सचमुच ही उस दिन के बाद से किसी भी पुलिस वाले ने उन्हें कभी परेशान नहीं किया । उन्हें बुलाने कोई पुलिस का जवान उसके बाद कभी नहीं आया।

१९२४ में उस्मानाबाद (धाराशिव) जिले में आर्य समाज की स्थापना की गई । केशवराव कोरटकर, अघोरनाथ चट्टोपाध्याय, श्रीपादराव सातवलेकर आदियों के नेतृत्व में उस्मानाबाद जिले में कई स्थानों पर आर्य समाज का संगठन खड़ा होने लगा। कई स्थानों पर आर्य समाज मंदिर खोले गए । बापूराव मास्टर,रामभाऊ मैंदरकर, तुलजाराम सुरवसे ने मिलकर उस्मानाबाद जिले में आर्य समाज के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कामों में अच्छी तेजी लायी ।इनके साथ सन्मित्र समाज के दत्तोपंत जिंतूरकर, बलभीमराव हिंगे, ज्ञानराव सालुंके, डांगे, देविदासराव मुरूमकर, पुरुषोत्तमराव माशालकर आदि कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता संग्राम की तैयारी की दृष्टि से एक व्यायामशाला प्रारंभ कर बलोपासना का कार्य शुरु किया। महाराष्ट्र समाज के कार्यकर्ता द.या. गणेश, न.प. मालखरे, शंकर नायगांवकर, चंदुलाल गांधी, सुपेकर,जिंतुरकर, आदियों ने गांव-गांव जाकर जनजागृति का कार्य किया और स्वयं सत्याग्रह में भाग लिया । उन्हें सजा भी हुई।

इसी दौरान सोलापुर में 'दयानंद कॉलेज' की स्थापना हुई । मराठवाड़ा के लोगों के लिए सोलापुर यह शहर हैदराबाद की तुलना में शिक्षा और आर्थिक दृष्टि से ज्यादा सुलभ था । इसलिए दयानंद कॉलेज में छात्रों की संख्या तेज़ी से बढ़ने लगी। अंग्रेजों और निजामशाही के खिलाफ शुरू किए गए स्वतंत्रता संग्राम के लिए युवकों को प्रेरणा देने का कार्य इसी कॉलेज ने किया । यह बात एक जाहीर सत्य है। कॉलेज के विद्यार्थी आर्य समाज के विचारों से प्रभावित होकर निजाम के विरुद्ध 'सत्याग्रह और वंदे मातरम् सत्याग्रह' में पूरे जोर-शोर से भाग लेने लगे । दयानंद कॉलेज में मराठवाड़ा से आए हुए विद्यार्थियों ने 'हैदराबाद स्टूडेंट यूनियन' की स्थापना की। इस यूनियन के तत्वावधान में कॉलेज प्रांगण में विनायकराव जी विद्यालंकार, पंडित नरेंद्र जी, भाई बन्सीलाल जी जैसे आर्य समाज के नेताओं के भाषण होने लगे । गांधी जी के कहने पर कॉलेज छोड़ो आंदोलन को उग्र रूप प्राप्त हुआ और विद्यार्थी तेज़ी से कॉलेज छोड़कर जाने लगे । उस्मानाबाद जिले की सीमा पर लगे हर शिविर में दयानंद कॉलेज के विद्यार्थी हर काम में आगे थे । 'पहले स्वराज्य फिर शिक्षा' इस अपने ध्येय को हैदराबाद राज्य में फैलाने और हैदराबाद शहर तक पहुंचाने के लिए दयानंद कॉलेज के विद्यार्थी पहुंचे। कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य श्रीराम शर्मा जी, जो एक विख्यात इतिहासकार थे। इन्होंने विद्यार्थियों को देशप्रेम और धर्मप्रेम की शिक्षा तो दी ही, साथ ही अन्याय के विरुद्ध लड़ने की शक्ति भी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को निर्भय बनाया। दयानंद कॉलेज यह एक तरह से क्रांति के लिए शस्त्र और प्रेरणा प्रदान वाला एक असीमित भंडार बन गया था ।

हर छोटे-बड़े गांव में आर्य समाज की स्थापना होकर उसका काम बढ़ रहा था। अतः दीनदार सिद्दिक संगठन का प्रभाव कम होने लगा। मुरूम (तालुका उमरगा) में आर्य समाज की स्थापना हुई, तब निजाम ने वहां २०० फौजी जवानों की एक टुकड़ी भेजी तैनात की। फ़ौज की मदद से 'दीनदार सिद्दीक पार्टी' और 'खाकसार पार्टी' अपना कार्य करने लगी। आष्टा (कासार) में सिद्दीकी के भाषण से लोग भड़क उठे, क्योंकि भाषण के पहले सिद्दीक पार्टी के लोग मस्जिद में एक गाय लेकर आये थे । श्यामलाल जी को यह समाचार मिलते ही वे आष्टा (कासार)में पहुंचे। उन्होंने आष्टा(कासार),

मुरूम आदि गांव में भाषण देकर हिंदुओं को आर्य समाज की दीक्षा दी और उन्हें यज्ञोपवित पहनाया । आर्य समाज का आंदोलन हैदराबाद स्टेट की सीमा तक पहुंचा हुआ देखकर निजाम ने फौज का खर्चा भी हिंदुओं पर लाद दिया। इससे असंतोष और भी बढ़ने लगा । सर अकबर हैदरी उस समय निजाम के प्रधान थे । अनंतराव काका (आष्टा कासार), राम पांढरे और करबसप्पा ब्याले(मुरुम) ये सभी लोग हैदराबाद जाकर हैदरी साहब से मिले। सभी ने मिलकर हैदरी साहब को अनुरोध किया कि यह सारा खर्च हिंदू प्रजा पर लादना अन्यायपूर्ण है और उसे हटा दिया जाए। तब हैदरी साहब ने यह खर्च हिंदुओं और मुसलमानों पर एक समान कर दिया । लेकिन प्रजा के द्वारा फ़ौज का खर्च उठाना अन्यायपूर्ण ही था और यह चलता रहा । सोलापुर से प्रकाशित होने वाले 'वैदिक संदेश' और 'सुदर्शन', इन दो आर्य समाजी मुखपत्रों के माध्यम से संग्राम की सारी जानकारियाँ, आगामी कार्यक्रम और सूचनाएं लोगों तक पहुंचने लगे। 'वैदिक संदेश' ने तो 'निजाम सरकार के काले कानून' नामक पुस्तक भी प्रकाशित की।

हैदराबाद स्टेट में उस्मानाबाद जिले के कुल १३ लोगों पर भाषण और लेख लिखने पर प्रतिबंध लगाया गया था । इन १३ लोगों के नाम पूरे राज्य में जारी किए गए थे । इस सूची में राम पांढरे (मुरुम) का भी नाम था । इन १३ व्यक्तियों को 'नागवार बागी' करार देकर निज़ाम सरकार ने नोटिस भेजी थी ।

इस तरह से निजाम ने हर प्रकार से आर्य समाजी कार्यकर्ताओं पर अत्याचार किए। आर्य समाज पर निजाम को अत्यंत क्रोध था । हिंदुओं का संगठन करने वाले 'आर्य समाज' के आंदोलन को कुचलने के लिए उसने हर संभव मार्ग अपनाया । लेकिन उसकी प्रतिक्रिया 'आर्य समाज' की शाखाएं दुगनी होने में नजर आने लगी। आर्य समाज ने न केवल हिंदुओं का संगठन किया, बल्कि जन्मजात मुसलमानों को भी वैदिक पद्धति से दीक्षा देकर उनका शुद्धिकरण का कार्य अत्यंत द्रुतगति से जारी रखा। अनेक अस्पृश्यों को आर्य समाज में स्थान देकर उनके मन में आर्य धर्म के प्रति स्वाभिमान पैदा किया। आर्य समाज द्वारा हैदराबाद स्टेट में किया गया यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। आर्य समाज संगठन के कारण ही हैदराबाद स्टेट कांग्रेस मजबूती से खड़ी हो सकी।

(साभार– लेखक द्वारा रचित 'हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम' इस मराठी ग्रंथ से)

समाचार दर्पण

अजमेर में होगा 'ऋषि मेला'

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में वेदोद्धारक 'म.दयानन्द का बलिदान दिवस समारोह' सोत्साह मनाया जा रहा है। दि.१७, १८ व १९ नवम्बर को ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित १४० वें ऋषि दिवस समारोह में आर्य जगत् के तपस्वी संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान् आदि पधार रहे है। इस अवसर पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, वानप्रस्थ व संन्यास दीक्षा, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वत् व कार्यकर्त्ता सम्मान, आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। अतः इस समारोह में पधारने का आवाहन परोपकारिणी सभा ने किया है।

सूचना

आर्य सेनानी पं.गंगारामजी की जीवनी

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले क्रान्तिकारी आर्य योद्धा तथा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वैदिक विद्वान एडवोकेट पण्डित गंगारामजी वानप्रस्थीजी के प्रेरक जीवन पर प्रकाश डालनेवाला ऐतिहासिक ग्रन्थ शीघ्र ही छप रहा है।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द की २०० वी जन्मजयंती एवं हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के अमृत महोत्सव के पावन सुअवसर पर स्वतन्त्रता सेनानी पं.गंगाराम स्मारक मंचक की ओर से प्रकाशित हो रहे इस ग्रन्थ का लेखन आर्य जगत् के ९३ वर्षीय वरिष्ठ इतिवासविद् लेखक प्रा.श्री राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु' ने किया है। इस अमूल्य ग्रन्थ में प्रा.'जिज्ञासु'जी ने पं.गंगारामजी के जीवन के ऐसे-ऐसे क्रान्तिकारी प्रसंग संशोधित कर आर्यजनों व सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किये है कि जिन्हें पढकर पाठकवृन्द निश्चितही प्रभावित होंगें और उन्हें प्रेरणा मिलेगी। ३०० पृष्ठीय इस ऐतिहासिक जीवन चरित्र में १६ पृष्ठ फोटोग्राफ के है। इसका मूल्य रु.२००/- रखा गया है, किन्तु पाठकों के आग्रह पर प्रकाशनपूर्व इस ग्रन्थ का मूल्य मात्र रु.१००/- निश्चित किया है।अतः जो पाठक इस ग्रन्थ को खरीदना चाहते है,वे श्रुतिकान्तजी भारती (९३९१०५२९८८), पं.प्रियदत्तजी शास्त्री(९५०२७४२६७२) तथा भक्तरामजी (८३३२८८१२१५) इनसे सम्पर्क करें।

महाराष्ट्र में श्रावणी वेदप्रचार आरम्भ

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिषधि सभा के तत्त्वावधान में १७ अगस्त से राज्य की सभी आर्य समाजों में श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव मनाये जा रहे हैं। यह व्यापक वेदप्रचार कार्यक्रम 'मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान' के रुप में विगत २५ वर्षों से चल रहा है। इस वर्ष भी उत्तर भारत से १० विद्वानों व भजनोपदेशकों की टीम आमंत्रित की गयी है। साथ ही महाराष्ट्र के लगभग ५० प्रचारक इसमें सम्मिलित हैं। आर्य समाजों के साथ ही सामान्य लोगों तथा स्कूल व कॉलेजों के छात्रों में व्याख्यानों के माध्यम से वैदिक धर्म का सन्देश पहुंचाना, यह इस अभियान का उद्देश्य है।

१७ अगस्त को वारजे, पुणे, सम्भाजीनगर, सोलापुर, उमरगा, पुणे इन शहरों में श्रावणी वेदप्रचार पर्व का शुभारम्भ हुआ। वारजे में सहारनपुर से पधारे पं.शिवकुमारजी शास्त्री एवं भजनोपदेशक पं.प्रदीपजी आर्य ने मौलिक विषयों को रखा। आर्य समाज के साथ ही आर्य विद्यालय एवं पारिवारिक सत्संग भी संपन्न हुआ। तत्पश्चात् पुणे की ही प्रसिद्ध आर्य समाज पिम्परी में इन विद्वानों ने वैदिक ज्ञान-विज्ञान की अमृत वर्षा की।

सम्भाजीनगर की दोनों आर्य समाजों में पानिपत (हरियाणा) से आमन्त्रित दार्शनिक विद्वान आचार्य श्री सानन्दजी एवं मेरठ (यू.पी.) के भजनोपदेशक पं.अजयजी आर्य ने श्रोताओं के सम्मुख वैदिक धर्म उपयुक्तता को विषद किया। गारखेडा आर्य समाज में सायं.-प्रातः कार्यक्रम होते रहे। अन्तिम दिन कन्या गुरुकुल में भी ब्रह्मचारिणियों के लिए विशेष उपदेश हुआ। तत्पश्चात् इन दोनों के बीड के दो वैद्यकीय महाविद्यालयों में छात्रों के लिए अतिशय उपयुक्त व्याख्यान सम्पन्न हुए।

पूर्णा, हिंगोली, निवघा, हदगांव इन स्थानों पर दिल्ली से पधारे आचार्य यशवीरजी एवं बरेली के पं.नेत्रपालसिंहजी ने वेदप्रचार किया। सोलापुर, लातूर, शिवणखेड में आचार्य पं.ज्ञानप्रकाशजी शास्त्री(बलिया-उ.प्र.) एवं पं.विष्णू आर्य(मथुरा) इन दोनों ने श्रोताओं को प्रभावित किया। आचार्य श्री विवेकजी दीक्षित (फरिदाबाद) एवं पं.अमरेशजी आर्य (देवबन्द) ने उमरगा, गुंजोटी, माडज, निलंगा व अन्य स्थानों पर वैदिक विचारों का प्रचार किया।

(विस्तृत वृत्तान्त अगले अंक में...)

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

श्रेष्ठ मानव बनो ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एफ. ३३३/र.बं.६/टी.इ. (७)९६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

❋ मराठी विभाग ❋

❋ उपनिषद संदेश ❋

उठा व जागे व्हा...!

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

(कठोपनिषद्-३/१४)

अर्थ – मोक्षाची अभिलाषा बाळगणाऱ्या भक्तांनो! ईश्वराच्या ज्ञानप्राप्तीसाठी उठा, जागे व्हा, अविद्येची झोप सोडा. श्रेष्ठ अशा ब्रह्मज्ञानी आचार्यांच्या सान्निध्यात राहून अष्टांग योगाचे अनुष्ठान करीत ब्रह्मज्ञानाला प्राप्त करा. ब्रह्मसाक्षात्कारी विद्वान लोक हे 'ब्रह्मतत्वाचा ज्ञानमार्ग हा दुःखाने प्राप्त होण्यायोग्य आहे', असा उपदेश करतात. हा मार्ग म्हणजे जणू काही तलवारीच्या धारेवर चालण्यासारखाच आहे.

❋ दयानंद वाणी ❋

पुराण समीक्षा

पुराणातील बहुतेक गोष्टी खोट्या आहेत, परंतु घुणाक्षरन्यायाने एखादी गोष्ट खरीही आहे. जी एखादी गोष्ट खरी आहे, ती वेदादी सत्यशास्त्रांतून घेतलेली आहे. आणि ज्या गोष्टी खोट्या आहेत, त्या भटाभिक्षुकांनी रचलेल्या आहेत. उदाहरणार्थ, शिवपुराणामध्ये शैवांनी शिवाला परमेश्वर मानून विष्णू, ब्रह्मा, इंद्र, गणेश, सूर्य इत्यादिकांना शिवाचे दास ठरविले आहे. वैष्णवांनी आपल्याा विष्णुपुराणात विष्णूला परमात्मा मानून शिवादिकांना विष्णूचे सेवक बनविले. देवी भागवतात देवीला परमेश्वरी आणि शिव, विष्णू वगैरेना तिचे नोकर बनविण्यात आले. गणेश पुराणात गणपतीला ईश्वर व इतर सर्वांना त्याचे दास बनविले गेले. या साऱ्या गोष्टी या सांप्रदायिकांनी नव्हे तर कोणी केल्या? ही सारी पुराणे एकाच माणसाने रचली असती तर त्यात अशा परस्परविरोधी गोष्टी आल्या नसत्या.

(सत्यार्थ प्रकाश-११ वा समुल्लास)

श्रीकृष्णांचे आदर्श प्रेरक जीवन!

– प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

श्रीकृष्णांच्या पावन सच्चरित्रावर दृष्टिक्षेप टाकल्यास आपणांस असे निदर्शनास येते की त्यांनी तत्कालीन दुरवस्थेला सुव्यवस्थेत रूपांतरित करण्यासाठी मनसा, वाचा, कर्मणा अतिशय मौलिक योगदान दिले आहे. आपल्या जन्माची पवित्र अभिलाषा व्यक्त करतांना ते स्वतःच म्हणतात–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

म्हणजेच जेव्हा-जेव्हा या भूतलावरुन माणुसकी व धर्म नाहीसा होऊन दानवतेचे व अधर्माचे प्रस्थ वाढू लागेल, तेव्हा-तेव्हा मी जन्म घेऊ इच्छितो. पण आपला हा जन्म कशासाठी? तर **'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।'** हा जन्म एक दोन वेळा नव्हे तर निरनिराळ्या युगांमध्ये ! केवढी ही सत्यस्थापनेची आणि असत्याचा नायनाट करण्याची पवित्र आकांक्षा !

अगदी बालपणापासून ते जीवनाच्या अंतापर्यंत श्रीकृष्ण हे सर्वांगिण प्रगतीच्या पथावर अग्रेसर राहिले. राजा व प्रजा या दोन्हींना धर्ममार्गावर आणण्याकरिता ते सदोदित प्रयत्नपूर्वक कर्तव्यबोध करीत राहिले. धर्म-कर्मावर त्यांची नितांत श्रद्धा होती.

योगेश्वरांच्या समग्र जीवनावर प्रकाश टाकला तर त्यांची पवित्र जीवन हे भारतीय इतिहासाच्या आकाश मंडळातील नक्षत्राप्रमाणे जाज्वल्य असे भासते. अत्यंत प्रतिकूल अवस्थेत कारागृहामध्ये जन्म झाला. मथुरेत गोपाळांच्या सहवासात बालपण घालविले. व्यायामाने शरीर हृष्टपुष्ट बनविले. दुष्ट राजा कंसाचा अंत करून ते राज्य आपल्या आजोबांना प्रदान केले. पुढे गुरुकुलीय शिक्षण घेण्यासाठी उज्जैन येथे दाखल झाले. येथील महर्षी सांदिपनींच्या आश्रमात जाऊन ब्रह्मचर्यपूर्वक वेद - वेदांगाचे अध्ययन केले. तेथे ही कठोर ब्रह्मचर्य पालन, परिश्रम व सुयोग्य दिनचर्येतून अध्ययनासोबतच श्रद्धेने गोमातेची सेवा केली .यज्ञाकरिता समिधा वेचल्या. सुदामासारख्या धनहीन दरिद्र ब्राह्मण मित्राशी प्रेमाचे नाते जोडले.. आपला अध्ययनकाळ संपल्यानंतर पुढील आयुष्य वैदिक परंपरेला अनुसरून चक्रवर्ती साम्राज्य निर्माण करण्यासाठी

वाहिले. हस्तिनापुरात येऊन कौरवांना अधर्मापासून परावृत्त करण्याचा प्रयत्न केला. पांडवांची वारंवार समजूत काढून सद्धर्माचा उपदेश देत राहिले. त्यांच्याच बुद्धी सामर्थ्याने कुरुक्षेत्राच्या रणांगणावर धनुर्धारी अर्जुनाला कौरवांशी लढण्याकरिता बळ मिळाले.

योगेश्वर कृष्ण यांचे समग्र जीवन वेदोक्त धर्माच्या पालनात नेहमीच अग्रभागामी राहिले आहे. आपल्या अप्रतिम बुद्धीतेजाने , प्रखंड ज्ञानप्रतिभेने, प्रभावशाली व्यक्तिमत्वाने, प्रचंड धैर्यबल आणि योगमय जीवनाने त्यांनी इतरांना प्रभावित केल्याचे आपणास महाभारताच्या विविध प्रसंगातून दिसून येते. राजसूय यज्ञाच्या वेळी सर्वात अगोदर कोणाचा सन्मान करावा ? असा प्रश्न धर्मराज युधिष्ठिराने पितामह भीष्मांना विचारला, तेव्हा पितामहांनी सर्वात अगोदर श्रीकृष्णांचेच नाव घेतले. त्यावेळी पितामह भीष्म म्हणतात--

वेदवेदाङ्गं विज्ञानं बलं चाप्यधिकं तथा।
नृणां लोके हि कोऽन्योस्ति
विशिष्टः केशवादृते।।
दानं दाक्ष्यं श्रुतं शौर्यं
ह्रीकीर्तिर्बुद्धिरुत्तमा।
सन्नतिः श्रीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिश्च नियताच्युते।।

अर्थात श्रीकृष्ण हे वेद-वेदांगाच्या ज्ञानात व शारीरिक बळात अतुलनीय आहेत. तसेच दान, कौशल्य, शिक्षण ,शौर्य, शिष्टता, यश, बुद्धी, नम्रता, धैर्य ,आत्मसंतुष्टी इत्यादी बाबतीत हजारो पटीने मोठे आहेत. अशा केशवांना सोडून अन्य कोणास प्रथम अर्घ्यदाना(पूजना)करिता निवडावे? यावरून आपणांस लक्षात येते की राजसूय यज्ञप्रसंगी इतरही ऋषी,मुनी, आचार्य, शूरवीर राजे व आचारशील विद्वान लोक उपस्थित असतांनाही कृष्णांचेच नाव अग्रणी ठरले.

इतकेच काय तर जेव्हा युद्धाविषयीचा संधी प्रस्ताव घेऊन श्रीकृष्ण दुर्योधनाकडे निघाले. तेव्हा धर्मराज युधिष्ठिराने जे कांही म्हटले, त्याविषयी महर्षी वेदव्यास म्हणतात-

यो वै कामान्न भयान्न
लोभान्नार्थकारणात्।
अन्यायमनुवर्तेत स्थिरबुद्धिरलोलुपः।।
धर्मज्ञो धृतिमान् प्राज्ञः सर्वभूतेषु केशवः।
सम्परिष्वज्य कौन्तेयः
सन्देष्टुमुपचक्रमे।।(उद्योगपर्व)

म्हणजेच श्रीकृष्ण हे कधीही अन्यायाच्या पक्षाचे अनुसरण करणार नाहीत. कारण ते न्यायमार्गापासून विचलित करणाऱ्या आकांक्षा, भय, लोभ ,स्वार्थ इत्यादींपासून ते खूपच

अलिप्त आहेत. त्याचबरोबर सध्याच्या काळात सर्व मनुष्यांमध्ये श्रीकृष्ण हेच खऱ्या अर्थाने सर्वात मोठे धर्मात्मा, धैर्यवान व विद्वान आहेत. अशा या याप्रसंगी श्रीकृष्णांचे आलिंगन देऊन धर्मात्मा युधिष्ठिराने त्यांस आपला संदेश देण्यास सुरुवात केली.

श्रीकृष्णांच्या जीवनात सच्चारित्र्याला अढळ स्थान व तितकेच महत्त्व होते. आयुष्यभर त्यांनी मर्यादांचे पालन करून आपल्या निष्कलंक व उदात्त जीवनाचा आदर्श सर्वांसमोर ठेवला, जो की आजही तेजोमय दीपस्तंभाप्रमाणे आम्हां सर्वांना उत्तम प्रकारे जगण्यास प्रेरणा देतो आहे. दुर्दैवाने काही पुराणांमध्ये कृष्णांवर नाना प्रकारचे दोषारोपण करून त्यांच्या तेजस्वी व नक्षत्रासमान पवित्र जीवनाला दूषित करण्याचा प्रयत्न झाल्याचे आढळते. विशेष करून भागवत ग्रंथांमध्ये श्रीकृष्णांवर दही, दूध व लोणी चोरणारा, गोपिकांशी असभ्य वर्तन करणारा, त्यांची वस्त्रे चोरणारा कृष्ण म्हणून उल्लेख आढळतो. हा एक प्रकारे त्यांच्या धवल जीवनाला कलंकित करण्याचा प्रयत्न बऱ्याच वर्षांपासून सुरू आहे. वास्तविक पाहता श्रीकृष्णांनी असे कोणतेही अनिष्ट कार्य केलेले नाही. खऱ्या अर्थाने त्यांचे जीवन तर पावन सरितेप्रमाणे शुद्ध व निर्मळ होते. त्यांचा रुक्मिणीशी विवाह झाला होता. जवळपास बारा वर्षे घनघोर ब्रह्मचर्याचे पालन करून अपार तपश्चर्येनंतर रुक्मिणी व कृष्णांनी प्रद्युम्न नावाच्या सुपुत्राला जन्म दिला होता, जो की साक्षात्कृष्णासारखाच तेजस्वी होता. निरनिराळ्या कथाकल्पनांतून वर्णिल्या जाणाऱ्या राधेशी तर त्यांचा काहीही संबंध नाही. कारण ब्रह्मवैवर्त पुराणानुसार राधा ही त्यांची नात्याने मामी होती. आजही महाराष्ट्रामध्ये गवळणींचे रस्ते अडविणारा गोपाळ म्हणून कृष्णांचा उल्लेख केला जातो इतकेच काय? तर अशा आशयांच्या कविता, गाणी व लेखपण लिहीले जातात. तसेच भजन- कीर्तनाच्या माध्यमातूनही योगेश्वर कृष्णाच्या सर्वोत्तम चरित्रावर अशा चुकीच्या पद्धतीने चिखलफेक केली जाते. हा त्या महापुरुषांचा अवमान नव्हे काय ? म्हणून योगेश्वर श्रीकृष्णांचे आदर्श असे सुप्रेरक व उदात्त जीवन चरित्र सर्वांसमोर आले पाहिजे. हेच त्या योगेश्वरांच्या पवित्र जीवनाचे पूजन आणि त्यांच्याप्रती सद्भावनांची अंजली ठरेल.

. अशा थोर महात्म्याविषयी एकोणिसाव्या शतकातील सुप्रसिद्ध वेदज्ञ समाज सुधारक महर्षी दयानंद आपल्या

सत्यार्थ प्रकाश या ग्रंथात असे गोरवोद्‌गार काढले आहेत. श्रीकृष्णांच्या समुज्ज्वल जीवनाची प्रशंसा करीत ते भागवतकाराची घोर निंदा करतात व म्हणतात – **'पाहा! महाभारतामध्ये श्रीकृष्णचंद्रांचा इतिहास अतिशय उत्तम प्रतीचा आहे. त्यांचे गुण ,कर्म ,स्वभाव व चरित्र आप्त पुरुषांप्रमाणे आहे. त्यांच्या या आदर्श चरित्रात अधर्माचरण कुठेही सापडत नाही. जन्मापासून ते मृत्यूपर्यंत त्यांनी कोणतेही अधर्माचरण केले नाही. अथवा कोणतेही दृष्कृत्य त्यांच्या हातून घडले नाही, असे व्यासांनी म्हटले आहे. परंतू या भागवतकाराने वाटेल ते अनुचित दोष कृष्णाच्या माथी मारले आहेत. दूध, दही, लोणी इत्यादींची चोरी, कुब्जादासीशी समागम, परस्त्रियांशी रासक्रीडा इत्यादी खोटेच दोष श्रीकृष्णांवर लादले आहेत. ते सारे वाचून व इतरांना वाचून दाखवून, स्वतः ऐकून व इतरांना ऐकवून, इतर पंथांच्या लोकांनी श्रीकृष्णाची बदनामी चालविली आहे. हे भागवत नसते तर श्रीकृष्णांसारख्या महात्म्यांची खोटी निंदा मुळीच झाली नसती.'**

योगेश्वर श्रीकृष्णांनी अर्जुनास सांगितलेली गीता ही तर ज्ञानामृताचा सागर होय. कुरुक्षेत्राच्या धर्मभूमीवर युद्धाच्या पहिल्या दिवशी कर्तव्यापासून विमुख बनलेल्या आत्ममोही वीर अर्जुनाला सांगितलेले तत्त्वज्ञान हे आजच्या प्रत्येक मानवाला जीवन जगण्यास नवप्रेरणा देणारा ठरते. त्या ग्रंथरत्नाचा समारोप करतांना संजय देखील अगदीच सहजपणे म्हणतो –

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा
नीतिर्मतिर्मम।।

म्हणजेच जेथे श्रीकृष्ण आहेत आणि जेथे धनुर्धारी अर्जुन आहे, तेथे धर्म, श्री(वैभव), विजय, ऐश्वर्य व दृढ नीतिमत्ता देखील आहे.

अशा दिव्य युगपुरुषाचे पवित्र जीवन व त्यांनी केलेल्या सर्वोत्तम कार्याचे अनुकरण समग्र विश्वाच्या नवनिर्मितीसाठी अत्यंत आवश्यक आहे. भारताला पुन्हा एकदा गुरुस्थानी पोहोचवायचे असेल, तर योगेश्वरांच्या आदर्श कार्यांचे व त्यांनी श्रीमद्भगवद्गीतेत प्रतिपादित केलेल्या तत्त्वज्ञानाचे अनुसरण करणे, हाच खरा श्रीकृष्णाचा आदर्श सन्मान होय..!

हैदराबाद संग्राम व बलिदानी पत्रकार शोएब उल्लाखान

- प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी

आपला देश १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी स्वतंत्र झाला. ब्रिटिशांनी कूटनीती वापरुन भारताची फाळणी केली. त्यामुळे भारताचे तुकडे होवून पाकिस्तान हा मुस्लिमबहुल नवीन देश उदयास आला.

भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतरही स्थानिक संस्थानांचा प्रश्न सुटलेला नव्हता, त्यावेळी छोटी-मोठी अशी ५६५ संस्थाने होती. त्यांनी भारतात विलीन व्हायचे का स्वतंत्र राहायचे? याची जबाबदारी ब्रिटिशांनी त्यांच्यावर सोडली होती. यातील बहुसंख्य संस्थाने भारतात विलीन झाली. मात्र हैदराबाद संस्थानचा सातवा व शेवटचा शासक मीर उस्मान अली खाँ भारतात विलीन व्हायला तयार नव्हता.

औरंगजेबानंतर दिल्लीच्या शासनकर्त्यामध्ये गादीसाठी संघर्ष सुरु झाला व ते राज्य खिळखिळे बनले. याचा फायदा घेऊन सन १७४२ साली निजाम उलमुल्कने हैदराबादच्या जहागिरीवर स्वतःने बस्तान बसवून स्वातंत्र्य जाहीर केले.

सन १७२४ ते १९४८ पर्यंत जवळ-जवळ २२४ वर्षे हिंदू प्रजा व मुसलमानांचे सलोख्याचे संबंध होते. सन १९११ मध्ये सातवा व शेवटचा निजाम मीर उस्मान अलीखाँ गादीवर आला, त्याने १९४८ पर्यंत हैदराबाद संस्थानावर शासन केले. त्याच्या कारकीर्दीच्या शेवटच्या टप्प्यात येथील हिंदू प्रजेवरील अन्याय व अत्याचारात वरचेवर वाढ होत गेली. देशांत स्वातंत्र्याच्या चळवळीचा जोर वाढत होता. भारताला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतरही आपले हैदराबाद संस्थान स्वतंत्र ठेवावे, हा विचार निजामाच्या मनात बळावत गेला.

सन १९२७ मध्ये मजलिसे इतेहादुल मुसलमीन या संघटनेची स्थापना झाली. या संघटनेचा प्रमुख बहाद्दुर यार जंग होता. त्याचा प्रभाव वरचेवर वाढत चालला होता. हे निजामाला खटकू लागले. सन १९४४ मध्ये त्यांचा संशयास्पद मृत्यू झाला. त्यांच्यानंतर या संघटनेची सूत्रे लातूरच्या कासिम रजवीकडे आली. तो कट्टर

मुस्लिम होता. निजाम राज्याचे इस्लामीकरण करणे, हा त्याचा उद्देश होता. पुढे तो निजामाचा सल्लागार बनला. त्याने दिल्लीच्या लाल किल्ल्यावर 'आसफिया घराण्याचा पिवळा ध्वज फडकावण्याचे' विचार निजामाच्या डोक्यात घुसविले.

हैदराबाद संस्थानामध्ये एकूण १६ जिल्हे होते. पाच मराठवाड्याचे, तीन कर्नाटकाचे व आइ तेलंगणाचे होते. या संस्थानात ७८% व १३% मुस्लिम होते. मात्र अधिकार पदावर ९५% मुस्लिम होते. संस्थानातील १६ जिल्ह्यांपैकी १४ जिल्ह्यांच्या कलेक्टर पदावर मुस्लिम अधिकारी होते. हिन्दुबहुल असलेल्या संस्थानाची राजभाषा उर्दू बनविली.

सन १७२४ ते १९४८ या काळात हैदराबाद संस्थानावर सात निजामांनी सत्ता गाजवली. यापैकी शेवटचा निजाम मीर उस्मान अलीखाँ सर्वात खतरनाक, दगाबाद, महत्त्वाकांक्षी व धर्मांध होता. त्या काळात अलिगढ मुस्लिम विद्यापीठाला त्याने दहा लाख रु.ची देणगी दिली होती. संस्थानाबाहेरच्या मुस्लिमांना बोलावून मोठमोठ्या पदाच्या नौकऱ्या दिल्या होत्या.

भारतातील इतर संस्थानिक भारतात विलीन होत असतांना सातवा निजाम मीर उस्मानअली खाँन यांनी भारतात विलीन होण्यास ठाम नकार दिला. वास्तविक भारताच्या अखंडतेसाठी हैदराबाद संस्थान भारतात विलीन होणे आवश्यक होते. पण निजामाच्या भूमिकेमुळे संस्थानातील परिस्थिती दिवसेंदिवस कठिण होत होती. निजामाच्या आशीर्वादाने स्थापन झालेल्या 'मजलिसे इत्तेहादुल मुसलमीन' संघटनेच्या माध्यमातून संस्थानातील हिंदू प्रजेवर मोठ्या प्रमाणात अन्याय अत्याचार करीत होते.

अशा या धर्मांध शासनकर्त्याला कासिम रिझवी सारख्या धर्मांध व कडव्या मुस्लिम नेत्याची साथ मिळाली. मजलिसे इत्तेहादुल मुसलमीन अंतर्गत स्थापन झालेल्या 'रझाकार' या संघटनेची खरी वाढ लातूरच्या कासिम रिझवीच्या आगमनानंतर झाली. या संघटनेला 'पस्ताकोम' या संघटनेची मोठ्या प्रमाणात साथ मिळाली. रजाकारांनी हजारो लोकांच्या कत्तली केल्या. अनेक गावे जाळली. खून, बलात्कार, लुटालूट याची परिसीमा गाठली.

हिन्दू जनता असंघटित होती. रजाकारांच्या अनन्वित छळाला घाबरुन आपले जीव वाचविण्यासठी घरेदारे, शेती व जनावरे वाऱ्यावर सोडून निजाम

राज्याच्या बाहेर बार्शी, सोलापूर, पुणे, उरळीकांचन, विदर्भ, विजापूर, विजयवाडा इत्यादी भागात निर्वासित बनून राहू लागले.

शहीद अशफाख उल्लाखान या थोर देशभक्त क्रांतिकारकासारखं शोएबचं मन बालपणापासूनच देशप्रेम व देशभक्तीच्या विचाराने भारलेले होते. बालपणापासूनच पत्रकारितेमध्ये आवड होती. सुरुवातीला 'तेज' नावाचे साप्ताहिक सुरु केले, पण निजामशाहीने त्यावर बंदी आणली. 'रय्यत' या उर्दू दैनिकाचे श्री एम.नरसिंहराव हे निडर, राष्ट्रभक्त, उत्साही असे संपादक होते. त्यामध्ये निजामशाहीच्या अन्यायकारक घटनांचे वर्णन छापून येत असे.

शोएब सुरुवातीला रयतचे पत्रकार व नंतर उपसंपादक म्हणून काम करु लागले. शोएब व नरसिहराव एम. चे विचार जुळले होते. या दैनिकांतून निजामाच्या अन्यायाला वाचा फोडणे सुरु होते. निजामाने 'रय्यत' बंद करण्याचा आदेश दिला. पो.कमिशनर फजल-ए रसुल खान याने दै.रय्यतच्या कार्यालयात आपल्या फौजफाट्यासह येऊन सर्वांना बाहेर काढून कार्यालयाला कुलूप लावले.

पण निराश न होता 'इमरोज' वृत्तपत्र काढण्याची शासकीय मंजुरी पूर्वीच शोएबकडे होती. शोएब पदवीधर होता. त्याला त्या काळात शासकीय नोकरी सहज मिळू शकली असती, पण निजामाच्या अन्याय व अत्याचाराची मोठी चीड होती. त्यांनी विचार करूनच पत्रकारितेचा पेशा स्वीकारला होता. समाजात चेतना निर्माण करण्याची जिद्द होती.

त्याची ही तडफ पाहून एम.नरसिंहरावांनी त्यांचे मेहुणे रामकृष्णराव (नंतर १९५० मधील हैदराबाद राज्याचे पहिले मुख्यमंत्री बनले.) यांनी काचीगुडा रेल्वे स्थानकासमोरील रस्त्याच्या लिंगमपल्ली येथील 'लाल बंगला' तून '**इमरोज**' प्रकाशित करण्याचे काम सुरु झाले. थोड्याच अवधीत हे वर्तमानपत्र हैदराबादच्या जनतेचे लोकप्रिय दैनिक बनले. लोकमान्य टिळकांनी केसरीमध्ये 'सरकारचे डोके ठिकाणावर आहे काय?' हा अग्रलेख लिहून जनतेमध्ये ब्रिटिश शासनाविरुद्ध असंतोष चढविला होता. त्याच धर्तीवर इमरोज वृत्तपत्राने निजामाचे सिंहासन खिळखिळे करण्याचा चंग बांधला. कासिम रिजवीच्या नेतृत्वाखाली चाललेल्या रजाकारांच्या अन्याय व अत्याचाराविरुद्ध व

निजामाच्या बेबंदशाही राज्यकारभारावर 'दिन की सरकार और रात की सरकार' सारखे परखड संपादकीय लिहून जनतेत चेतना निर्माण करण्याचे कार्य सुरु केले. इतक्या कडव्या शब्दात अग्रलेख लिहून एका मुस्लिमाने दुसऱ्या मुस्लिमाविरुद्ध त्याच्या अन्याय अत्याचाऱ्यांच्या सत्य घटना जनतेसमोर मांडणे ही त्यांच्यासाठी सहन न होण्यासारखी बाब होती.

'इमरोज' दैनिकामुळे निजामाची सत्ता खिळखिळी होते की काय असे वाटू लागले. निजामी सत्तेविरुद्ध लोकमत तयार करण्याचे कार्य लेखणीच्या उदंड ताकदीने सुरु केलेला संपादक शोएब प्रतिगामी शक्तीच्या डोळ्यात सलू लागला. 'रात्रंदिन आम्हा युद्धाचा प्रसंग हे जाणूनच या धाडसी पत्रकाराने या संघर्षमय लढ्यात उडी घेतली होती. जुलमी सत्तेविरुद्ध ज्याने लेखणी हाती धरली आहे, त्याला सदैव मृत्युचे मनगट धरुन फिरण्याची हिम्मत असावी लागते.' शोएब असाच हिम्मतबाज संपादक होता. शोएबचा 'इमरोज' लोकमान्यांचा 'केसरी' होता.

'हिंदू आणि मुसलमान हे माझे दोन डोळे आहेत', असे म्हणणारा सातवा निजाम मीर उसमान अलीखान कट्टरपंथी रजाकारांच्या दबावात येऊन त्यांचा लोकप्रिय आणि धर्मनिरपेक्ष पिता नवाब मीर महबूब अलीखानच्या नीतीविरुद्ध पावले उचलू लागला. असिधाराव्रत घेतलेला संपादक असल्या धमक्यांना कसा भीक घालेल?

हैदराबादमध्ये तणाव वाढत होता, परंतू शोएबची लेखणी थांबत नव्हती. 'इमरोज'च्या कार्यालयाच्या खिडकीतून धमकीवजा पत्रे टाकली जाऊ लागली. 'शोएब तू हे काय लिहीत आहेस? तुझी लेखणी इस्लामी शासनाविरुद्ध काम करीत आहे. याचा परिणाम वाईट होईल. तुला 'इमरोज' बंद करावे लागेल आणि हैदराबाद सोडून त्याच्या सरहद्दीबाहेर जावे लागेल.' अशा धमकीवजा पत्रामुळे शोएब थोडाही विचलित झाला नाही. त्याने होणाऱ्या परिणामाची पर्वा केली नाही. शोएबला आणखी एक धमकीवजा पत्र मिळालं, ज्यामध्ये स्पष्ट लिहिले होते, 'शोएब! तुझ्या लेखणीला आवर, अन्यथा मरण्यासाठी तयार रहा.' इतक्या धमकीनेही तो डगमगला नाही. शोएबच्या मित्रांनी पण समजावले. त्याला सावध राहण्याचा सल्ला दिला.

अगदी थोडच्या कालावधीत 'इमरोज' हैदराबादच्या जनतेच्या गळयाचे ताईत बनले. हैद्राबाद मुक्तिसंग्रामाचा लढा हा धार्मिक लढा

नव्हता, तर जुलमी हुकूमशाहीच्या विरोधात लोकशाहीच्या प्रस्थापनेसाठी सामान्य जनतेने दिलेला लोकलढा होता. भारत स्वातंत्र्य चळवळीची परिपूर्ती हैदराबाद मुक्तिसंग्रामाने झाली. हा इतिहास त्यागाचा व शौर्याचा आहे.

दि.२१.०८.१९४८ राजी रात्री १ वाजता तो व त्याचे मेहुणे इब्राहिमखान छापखान्यातून घरी जाण्यासाठी निघाले. लिंगमपल्लीच्या चौकात कोणीतरी त्यांचा पाठलाग करीत होते. परंतु अंधारामुळे कोणी दिसले नाही. रजाकाराची टोळी त्यांचा पाठलाग करीत होती. त्यातील एकाने पुढे होऊन त्यांना नमस्कार केला. त्यामुळे ते थांबले. इतक्यात एकाने तलवारीने शोएबच्या एका हातावर वार केला. हात धडापासून वेगळा झाला. दुसऱ्या मागून बंदुकीची गोळी मारली, ती त्याच्या पाठीतून गेली. शोएब जमिनीवर कोसळला. तिसऱ्याने तलवारीने दुसरा हात धडावेगळा केला. एवढ्यावर त्याचे समाधान झाले नाही. बंदुकीच्या दोन गोळ्या डोक्यावर झाडल्या. शोएबप्रमाणे त्याचे मेहुणे इस्माईलचाही तलवारीने खून केला. अशाच अवस्थेत त्या दोघांना लोकांनी त्यांच्या घरी पोहोचविले. शोएबच्या आईला देशभरातून आर्थिक सहाय्यता दिली गेली. त्या वीर मातेने ती पूर्ण रक्कम उस्मानिया विद्यापीठामध्ये स्थापित, **'शहीद शोएब उल्ला खान पत्रकारिता पुरस्कार'** ला समर्पित केली. धन्य ते शहीद शोएब उल्लाखान व धन्य ती माता!

शोएबच्या बलिदानी घटनेवर भाष्य करतांना त्यांचे वरिष्ठ सहकारी संपादक एम.नरसिंहराव म्हणतात, 'शोएबने आपल्या हौतात्म्याने हैदराबाद पोलीस कार्यवाही फार जवळ आणली.' अशा या शूरवीर बलिदानी पत्रकारास भावपूर्ण श्रद्धांजली व अभिवादन..!

(लेखक इतिहासाचे अभ्यासक, निवृत्त प्राध्यापक व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपमंत्री आहेत.)

– आनंद नगर, नांदेड नाका, उदगीर

मो.९४२२६१०३१३

महाराष्ट्रात श्रावणी पर्व उत्साहात साजरे...!

राज्यातील सर्व आर्य समाजात यावर्षीचे श्रावणी वेदप्रचार पर्व अतिशय उत्साहात संपन्न झाले. ठिकठिकाणी यज्ञ, भजन, प्रवचने आणि विद्यार्थ्यांसाठी प्रबोधनपर कार्यक्रम पार पडले. सर्व आमंत्रित विद्वानांचे व आयोजक आर्य समाज पदाधिकाऱ्यांचे महाराष्ट्र आ.प्र.सभेतर्फे अभिनंदन व हार्दिक धन्यवाद! यासंबंधीचे वृत्त पुढील अंकात प्रसिद्ध होतील. – सभामंत्री/संपादक

महाराष्ट्र विधानसभा अधिवेशनात

हैदराबाद संग्राम व आर्य समाजाचा गौरव

महाराष्ट्र विधानसभेचे विशेष पावसाळी अधिवेशन जुलै-ऑगस्ट दरम्यान पार पडले. यात हैदराबाद स्वातंत्र्य (मराठवाडा मुक्ती) संग्रामाच्या अमृतमहोत्सवी वर्षानिमित्त थोर क्रांतिकारी हुतात्म्यांना व स्वातंत्र्य सैनिकांना अभिवादनाचा ठराव मुख्यमंत्री ना.एकनाथ शिंदे यांनी मांडला. त्यांवर विस्ताराने चर्चा होऊन हा ठराव एकमताने मंजूर करण्यात आला. या प्रस्तावावर मराठवाड्यातील आमदारांनी विचार व्यक्त केले. विशेष म्हणजे तुळजापुरचे आ.राणा जगजितसिंह पाटील व औशाचे आ.श्री अभिमन्यू पवार यांनी आपल्या भाषणातून हैदराबाद मुक्ती लढ्यात आर्य समाजाने केलेल्या महानतम कार्याचा गौरव केला.

आ.राणा म्हणाले, 'आर्य समाजाच्या माध्यमातून या हैदराबाद मुक्ती संग्रामात फार मोठे कार्य घडले आहे. स्वा.सै.भास्करराव नायगावकर यांनी पंतप्रधान श्री मोदी यांना लिहिलेल्या पत्राचा उल्लेख करून ते म्हणाले- आर्य समाजाने हैदराबादच्या आंदोलनात अद्वितीय असे कार्य केले आहे, जे की नव्या पीढीला राष्ट्रीयत्वाची जाणीव करुन देणारे आहे. तर आ.अभिमन्यू पवार यांनी हैदराबादचा संग्राम हा अतिशय रक्तरंजित असा राष्ट्रीय स्वरुपाचा होता. यावेळी ते म्हणाले, संग्रामकाळात हिंदू समाजावरील वाढणाऱ्या भयंकर अत्याचाराकडे आर्य समाजाने लक्ष वेधून त्यास रोखण्याचे काम केले. आर्य समाजाने हा लढा अखिल भारतीय पातळीवर लढला. कारण यात उत्तर भारतासह या भागातील जवळपास ४० हजाराहुन अधिक आर्य समाजी अनुयायी सहभागी झाले. विशेष म्हणजे या रजाकाराच्या अत्याचारात सर्वात पहिले हौतात्म्य आर्य समाजाने पत्करले आहे. गुंजोटी (उमरगा) येथील वेदप्रकाश या आर्य समाजी युवकाने दिलेले बलिदान अविस्मरणीय असे आहे.

शोक समाचार

शेषरावजी मगर यांना पत्नीशोक

तळणी ता.हदगांव जि.नांदेड येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री शेषरावजी मगर यांच्या धर्मपत्नी सौ.अन्नपूर्णाबाई मगर यांचे दि.२ ऑगस्ट २०२३ रोजी रात्रीच्या तिसऱ्या प्रहरी ३.१५ वाजता अर्धांगवायू आजाराने दुःखद निधन झाले. त्या ७५ वर्षे वयाच्या होत्या. गेल्या कांही महिन्यांपासून त्यांची प्रकृती खालावत गेली. त्यांच्या मागे पति, दोन मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

अल्पशिक्षित असल्या तरी श्रीमती अन्नपूर्णाबाई या अतिशय धार्मिक, सत्यनिष्ठ व वैदिक धर्मावर निष्ठा बाळगणाऱ्या होत्या. कुटुंबाला सुशिक्षित व सुसंस्कारित करण्यात त्यांनी कोणतीही कसर सोडली नाही. श्रीमती मगर यांच्या पार्थिवावर दुपारी १२ वा. पं.सोगाजी घुन्नर यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

विलास शिंदे यांचे अकाली निधन

शिवणखेड (बु.) ता.चाकूर येथील आर्य कार्यकर्ते व प्रगतिशील शेतकरी श्री विलास आबासाहेब शिंदे यांचे दि.७ ऑगस्ट २०२३ रोजी दुपारी हृदयविकाराने आकस्मिक दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ५२ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् आई-वडील, पत्नी लताबाई, दोन मुले विशाल व विष्णू, मुलगी व सून असा परिवार आहे. आर्य समाजाचे मंत्री श्री बभ्रुवाहन शिंदे यांचे ते पुतणे होते.

स्व.विलास शिंदे हे धार्मिक, सुस्वभावी, मनमिळावू व कष्टकरी होते. सर्वांशी त्यांचे जिव्हाळ्याचे व स्नेहाचे नाते होते. सेवा सोसायटीचे ते सदस्य ही होते. त्यांच्या अकाली निधनाने शिवणखेड गाव व परिसरात हळहळ व्यक्त होत असून कुटुंबासह आर्य समाजाची हानी झाली आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी १० वा. पं.चद्रेश्वर शास्त्री यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांच्यासह आर्य कार्यकर्त्यांनी श्रद्धांजली अर्पण केली.

दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजांची भावपूर्ण श्रद्धांजली!

श्रावणी वेदप्रचार समारोह

बीड के आदित्य दन्त महाविद्यालय में छात्रों को मार्गदर्शन करते हुए आचार्य पं.सानन्दजी।

आर्य समाज परली में मार्गदर्शन करते हुए वैदिक विद्वान आचार्य श्री सानन्दजी एवं भजनोपदेशक पं.अजय आर्य।

उमरगा में भजनोपदेश देते हुए पं.श्री अमरेशजी आर्य। मंच पर हैं आचार्य पं.विवेकजी दीक्षित!

सेवा में,

श्री. ________________________

____

____

____

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली-वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थानपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

मातृ देवो भव !

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि !

॥ओ३म्॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी, वैदिक सिद्धान्तों के अध्येता

दानशूर आर्य कार्यकर्त्ता श्री समाधान लक्ष्मीकांतजी पाटिल

व सौ. कविता समाधान पाटिल

मु. पो. सावखेडा (खुर्द) ता. जि. जलगांव एवं पाटिल परिवार

की ओर से अपनी पूजनीया दादीमाँ

स्व. श्रीमती गुंढरबाई किशनरावजी पाटिल

इनकी पावन स्मृति में

वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट